'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 20 | 4 जनवरी 2018 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्री क्षत्रिय युवक संघ का 72वां स्थापना दिवस मनाया

'शताब्दियों की योजना है संघ'

श्री क्षत्रिय युवक संघ कोई पंचवर्षीय या दस वर्षीय योजना नहीं बल्कि शताब्दियों की योजना है। यह कोई एक जीवन में सम्पन्न होने वाला काम नहीं बल्कि अनेकों जीवन तक चलने वाला काम है लेकिन धैर्य के अभाव में लोग पूछते हैं कि हम तो मर जाएंगे उसके बाद क्या? तो संघ यही कहता है कि हम मर जाएंगे, समाज नहीं मरेगा, समाज का जीवन व्यक्ति के जीवन से बहुत लम्बा होता है और उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक होता है जो समाज के इस लंबे जीवन में अपना सार्थक योगदान दे जाता है। संघ ऐसे ही सार्थक जीवन को जीने का मार्ग है। लेकिन समाज के लोग परिणाम की बात कर निराश होते हैं लेकिन संयमी लोग निरुत्साहित नहीं होते क्योंकि वे जागे हुए हैं। इस प्रकार के दूषित वातावरण में संयमपूर्वक जागृत रहकर जीवित रहना भी कम नहीं है, प्रदूषित वायु में सांस ले पाना भी कम बात नहीं है, हालांकि संघ संतोष कर बैठ नहीं रहा है, निरन्तर कर्मशील है लेकिन निराश भी नहीं है, किसी प्रकार की हीन भावना से ग्रस्त भी नहीं है क्यों कि संघ सतत् जागृत रहने का संदेश है इसीलिए संघ का सातत्य टूटता नहीं है।

बीकानेर में संघ के 72वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय शब्द को संकुचितता कहने वाले या आलोचना करने वाले इसकी परिभाषा ही नहीं जानते हैं। क्षत्रियत्व साधु जनों के रक्षण, दुष्टजनों के विनाश एवं धर्म की स्थापना का कार्य है और भगवान ने भी अपने अवतार का कारण गीता में यही बताया है ऐसे में भगवान का काम संकुचित कैसे हो सकता है। उन्होंने कहा संघ क्षत्रिय बनने के लिए अभ्यास और वैराग्य का मार्ग है और यह काम सरल नहीं है बल्कि बिना सिर की लड़ाई है। लेकिन समाज का सहयोग एवं साथियों का साथ चल रहा कारवां मेरा उत्साह बढ़ाता है, संघ का उत्साह बढ़ाता है। हमें लंबा सोचना होगा, संघ महाभारत काल से क्षरण को प्राप्त हो रहे समाज को पुनः उस वैभव पर आरुढ़ करने का कार्य है, यह विगत 1000 वर्षों की गुलामी के कारण हमारे आचरण में पनपी विकृतियों के निराकरण का कार्य है। संघ गर्भ में पल रहे भविष्य की ही चिंता नहीं करता बल्कि गर्भ में आने के पहले ही युवकों और युवतियों में विकसित हो रहे जीवन रस को विकृतियों से बचाने के लिए बरती जाने वाली सावधानियों के अभ्यास का कार्य है इसलिए संघ उतावला नहीं है बल्कि धैर्यपूर्वक साधनारत है, अभी तो भूमिका बन रही है, परिणाम, सदियों बाद प्रकट होंगे। संघ वेद के इस आदेश के तहत सामर्थ्यवान बनने का मार्ग है कि उठो, जागो और विश्वात्मा के दृष्टिकोण से तुम्हारी आवश्यकता को पहचानो।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

गरीब सवर्णों को मिले आरक्षण : मद्रास हाईकोर्ट

मद्रास हाईकोर्ट ने सुझाव दिया है कि निर्धन निर्धन होता है चाहे सवर्ण जाति का हो या पिछड़ा। इसलिए सरकार को आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों को भी आरक्षण देने की संभावना खोजनी चाहिए। न्यायालय ने सरकार को इसकी संभावना बताने का निर्देश देते हुए जानना चाहा है कि क्या 1950 के बाद ऐसा कोई सर्वे करवाया गया है जिससे आरक्षित वर्गों को आरक्षण के लाभ का आकलन किया जा सके। न्यायालय ने कहा कि गरीब सवर्णों के हितों की अनदेखी होती है।

'जो दायित्व मिले उसे सर्वात्मना निभाएं'

श्री क्षत्रिय युवक संघ में त्यागपत्र का कोई प्रावधान नहीं है। संघ प्रमुख के निर्वाचन को लेकर बने संविधान के अनुसार संघ प्रमुख भी अपनी ईच्छा से इस दायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। ऐसे में यही सिद्धान्त सभी सहयोगियों पर लागू होता है, प्रत्येक सहयोगी स्वयं को मिले दायित्व को सर्वात्मना निभाए एवं साथ-साथ अपना उत्तराधिकारी तैयार करता रहे लेकिन स्वयं की तरफ से काम छोड़ने का कभी आग्रह न करे। संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में विगत 17 दिसम्बर को आयोजित अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक में आए केन्द्रीय कार्यकारियों, संभाग प्रमुखों, प्रान्त प्रमुखों, केन्द्रीय विभाग प्रभारियों एवं प्रकोष्ठ प्रभारियों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हर सहयोगी अपने कार्यों का लेखा-जेखा तैयार करे एवं बदलने पर अगले सहयोगी को अपनी फाईल सौंपे। यदि काम बंद कर दिया तो अपनी फाईल संबंधित संभागीय कार्यालय में जमा करवाए।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जयराम ठाकुर बने हिमाचल के सीएम

राजपूत बहुल हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनावों में 50 प्रतिशत के लगभग राजपूत विधायक चुने गए हैं। भाजपा से मुख्यमंत्री पद के दावेदार प्रेमकुमार धूमल के चुनाव हारने के बाद किसी गैर राजपूत को मुख्यमंत्री बनाने की चर्चाएं चल रही थी लेकिन राजपूत विधायकों की संख्या एवं राज्य में बहुलता के कारण भाजपा नेतृत्व ने वरिष्ठ राजपूत विधायक जयराम ठाकुर को मुख्यमंत्री बनाया है। उन्होंने 27 दिसम्बर को मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की।

श्री क्षत्रिय युवक संघ
नववर्ष सन्देश
22 दिसम्बर 2017

भगवान द्वारा सृजित धरती माता को देशों के नाम पर स्वघोषित स्वामित्व स्थापित करके टुकड़ों में बांटा जाना आदिकाल से चल रहा है। इन टुकड़ों पर स्वामित्व बदलता भी रहा है। परन्तु जिस धरती पर हम पल रहे हैं उसका हाल जानने का प्रयत्न नहीं किया। इस पर पलने वाले मानव जाति एवं अन्य जीव जन्तुओं के कल्याण के बारे में नहीं सोचा गया। आज स्थिति बिगड़ते-बिगड़ते यहां तक पहुंच गई कि प्रभावशाली देशों पर शासन करने वाले शासकों ने विकास के नाम पर धरती को विनाश के शिखर पर खड़ा कर दिया है। बड़े राष्ट्रों ने नई तकनीक द्वारा विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया। छोटे देशों के विकास और सहायता के नाम पर ऋण उपलब्ध कराकर विनाशकारी अस्त्र-शस्त्र बेचने के लिए बाजार बना दिया है। युद्ध की आशंका से घिरे छोटे देश भी धरती माता की विनाश की भूमिका में खड़े हो गए हैं। शांति का प्रस्ताव रखने वाले देश ही अशांति का कारण बने हुए हैं।

इसी दौड़ में इसी धरती पर बसा विश्व गुरु भारतवर्ष भी भटक रहा है। इस देश की रक्षा का दायित्व ग्रहण करने वाला नेतृत्व भी भटक गया है। स्वतंत्र कहलाने वाला भारत अपना तंत्र भी नहीं बना पाया। विदेशी तंत्र ही हमारे देश में काम कर रहा है, आज भारत स्वतंत्र नहीं परतंत्र ही रह गया है। एक हजार वर्ष तक परतंत्र रहकर अपना तंत्र ही भूल गया है। जिसके तंत्र के अधीन देश, समाज रहता है, उसके गुण दोष भी अधीन देश, समाज ग्रहण कर लेता है।

आदिकाल से लेकर एक हजार वर्ष पहले तक इस देश पर छोटे-छोटे समूह में शासन करने वाले क्षत्रिय ही रहे हैं। अपनी भूमि की रक्षा करने में मौत का मुकाबला भी करते रहे। पूरे संसार में भारतीय संस्कृति की पहचान को बनाए रखने में क्षत्रियों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। विदेशी बर्बर जातियों ने हमारे भारत को लूट-लूट कर दरिद्र बनाने का भरसक प्रयत्न किया, पर कर न सके। आज भी हमारे देश में संसाधनों की कमी नहीं है। परन्तु इन विदेशी आक्रमणों के कारण हमारे धर्म, संस्कृति की बहुत हानि हुई। शिक्षा और समानता के अभाव में यह देश पुनः टुकड़ों में विभाजित हो गया। कभी भाषा के नाम पर तो कभी क्षेत्रीयता के नाम पर अलगाव होता ही जा रहा है। लगता है हम न देश की रक्षा कर पाए न धर्म, संस्कृति की। हमारे देश की तथाकथित स्वतंत्रता से पूर्व पूज्य तनसिंह जी ने विश्व और भारत वर्ष की दुर्दशा को भली भांति अनुभव किया। इस देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा का क्षत्रियों को दायित्व बोध कराकर सभी को जाग्रत किए बिना यह काम संभव नहीं था। दूर दृष्टि से आगामी कई शताब्दियों तक की योजना को ध्यान में रखकर 22 दिसम्बर 1946 में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। यह कोई जातीय संगठन नहीं, यह क्षात्रधर्म की पुनर्स्थापना की सुदृढ़ नींव रखी गई। यह केवल राष्ट्रीय संगठन भी नहीं, वैश्विक संगठन का रूप लेगा, ऐसी आदर्श कल्पना पूज्य तनसिंह जी की रही है। क्षत्रियों का संगठन इसलिए दिखाई देता है कि लोग क्षत्रिय की परिभाषा भी नहीं जानते। आदर्श क्षत्रिय का जीवन संसार के लिए है, अपने लिए नहीं।

पूज्य तनसिंह जी ने बताया कि व्यष्टि का समष्टि को समर्पण और समष्टि का परमेष्टि में समर्पण किए बिना संसार में परम सुख और परम शान्ति का अवतरित होना संभव नहीं। व्यक्ति के संस्कारों का सृजन करने से ही समाज व राष्ट्र के संस्कारों का सृजन संभव है और इसी भांति हमारा पूरा देश संस्कारित होकर ही संसार की पूरी मानव जाति को संस्कारित करने का एक महा-अभियान है - श्री क्षत्रिय युवक संघ। शरीर, मन, बुद्धि व प्राण को सुदृढ़ व संस्कारित करने का एक मानवीय आंदोलन है यह श्री क्षत्रिय युवक संघ। स्वकेन्द्रित मानव को समाज-राष्ट्र व मानव केन्द्रित बनाना साधारण कर्म नहीं। इस मार्ग पर चलने वालों का चरित्र सर्वोत्कृष्ट बनाने की आवश्यकता है। शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, विकट परिस्थितियों में भी पलायन न करने की प्रवृत्ति, दान व ईश्वरीय भाव का निर्माण करना ही हमारे संघ का लौकिक उद्देश्य है और यह है हमारा स्वधर्म। स्वधर्म का पालन कर, परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न ही हमारा अलौकिक उद्देश्य है। यही गीता में भगवान ने मार्गदर्शन दिया है। इसी मार्ग पर त्यागमय जीवन बनाकर बिना थके चलते रहना है। एक दिन, चाहे हजारों वर्ष पश्चात् ही क्यों न हो, विनाश के सम्मुख खड़ी सम्पूर्ण मानवता के लिए स्थिर सुख, शांति का प्रभात अवश्य आएगा क्योंकि यह हमारी नहीं परमेश्वर की चाह है। यह अवश्य पूर्ण होगी। हम हमारे समाज, हमारे राष्ट्र और सम्पूर्ण धरती के कल्याण के लिए कटिबद्ध हैं। सदैव परमेश्वर की इस मांग का अनुभव करते हुए-चरैवेति चरैवेति।

आज के दिन श्री क्षत्रिय युवक संघ 72वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आओ इस मंगल प्रवेश का स्वागत करें। मैं इस पुनीत संघ की ओर से सबका अभिनन्दन करता हूं।

जय संघशक्ति।

(भगवान सिंह),
संघ प्रमुख

‘गुरु शिखर से’ (विविध विषयों का कॉलम)

वीर चूण्डा सिसोदिया

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

चित्तौड़गढ़ के गोहिल कुल में वीरवर चूण्डा सिसोदिया का स्थान बहुत ही सम्माननीय है। पितृभक्त, स्वामीभक्त, त्याग व कर्त्तव्य परायणता की प्रतिमूर्ति थे चूण्डा। उनका जन्म महाराणा लाखा (लक्ष्यसिंह) की पटरानी लखमादे चौहान (खींची) की कोख से हुआ था। चूण्डा पर नैणसी, कवि श्यामलदास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा आदि ने विस्तार से लिखा है।

महाराणा लाखा की वृद्धा अवस्था के समय मारवाड़ के राव चूण्डा की पुत्री एवं रणमल (रिड़मल) राठौड़ की बहन हंसादेवी की सगाई का नारियल कुंवर चूण्डा सिसोदिया के लिए आया। उस समय राणा लाखा ने विनोद स्वरूप ही कहा कि नारियल मेरे लिए आया है क्या? तब कुंवर चूण्डा समझ गए कि पिता के मन में अभी भी शादी का विचार है। चूण्डा ने रणमल से अपनी बहन की सगाई राणा लाखा से करने का अनुग्रह किया। परन्तु रणमल कैसे मानते- उन्होंने चूण्डा से कहा कि राणा तो अब वृद्ध हो चले हैं और बड़े कुंवर हैं आप। आपसे मेरी बहन की शादी होती है तो वह महाराणी बनेगी एवं उसका होने वाला पुत्र मेवाड़ की राजगद्दी का हकदार होगा। मेरा भाणजा मेवाड़ का स्वामी होना चाहिए न कि राज दरबार का सेवक। बात बनती हुई नहीं देखकर चूण्डा ने मारवाड़ के चारण चन्दन खीड़िया को रणमल को समझाने भेजा कि एकलिंग नाथ को साक्षी मानकर शपथ लेता हूं कि मैं मेवाड़ का उत्तराधिकारी नहीं बनूंगा। मेरे पिता के इस विवाह से जो पुत्र होगा वह ही चित्तौड़ पर शासन करेगा। अन्ततः चूण्डा की प्रतिज्ञा भारी पड़ी एवं रणमल ने अपनी बहन की शादी चूण्डा के पिता राणा लाखा से कर दी। राणा के हंसादेवी से विवाह से मोकल का जन्म हुआ। राणा लाखा की मृत्यु के बाद कुंवर चूण्डा ने अपने हक का त्याग कर अपना वचन निभाया एवं मेवाड़ के उत्तराधिकारी के रूप में अपने सौतेले छोटे भाई मोकल का राज तिलक किया। 1420 ई. में महाराणा मोकल ने राजगद्दी पाई- चूण्डा ने ही सर्वप्रथम नजराना पेश किया। तब से ही एक फरमान जारी हुआ कि मेवाड़ के पट्टों परवानों पर भाले का अंकन चूण्डा के पाटवी वंशजों के हाथ से ही होगा।

‘लाखा स्वर्ग सिधारतां, मोकल बांधी पाग।
चित्रकूट रक्षा करण, चूण्डा बांधी खाग।।’

चूण्डा मोकल का राज्य प्रबंधन देखने लगे जिससे अनेक लोगों को उनसे ईर्ष्या होने लगी। उन्होंने राजमाता हंसादेवी को उकसाया कि चूण्डा राजसत्ता पर कब्जा करना चाह रहे हैं इसलिए उन्हें राज्य से बाहर कर देना चाहिए। चूण्डा मेवाड़ में अपने विरुद्ध इस षड्यंत्र से व्यथित होकर अपना राज्य छोड़ मालवा में माण्डू चले गए। उधर रणमल ने मेवाड़ की सेना की सहायता से अपने पिता राव चूण्डा राठौड़ के समय अपने भाई द्वारा प्राप्त की गई मारवाड़ की राजधानी मण्डोर पर अपना अधिकार कर लिया। इधर मेवाड़ में राणा मौकल की हत्या हो गई। रणमल ने मण्डोर से आकर मोकल के पुत्र कुम्भा को गद्दी पर बैठाया और स्वयं ने चित्तौड़ का शासन अपने हाथ में ले लिया। उसने चूण्डा सिसोदिया के भाई राधवदेव को भी मरवा दिया। राठौड़ का प्रभाव मेवाड़ के प्रशासन पर अधिक बढ़ गया। इस दौरान राणा कुंभा ने मेवाड़ राजसत्ता की सहायता के लिए माण्डू से चूण्डा को चित्तौड़ बुला लिया। इसी समय रिड़मल के भतीजे नरबद ने मेवाड़ के सरदारों के साथ मिलकर रिड़मल का वध करा दिया। रिड़मल का पुत्र जोधा उस समय चित्तौड़ दुर्ग की तलहटी में था। उसे अपने पिता रिड़मल की हत्या का पता चला तो वह अपने सैनिकों सहित वहां से भागने में सफल हो गया।

‘जोधा भाग सके तो भाग,
थारो रिड़मल मार्‍यो जाय।’

मेवाड़ की सेना के साथ चूण्डा सिसोदिया ने जोधा का पीछा किया। जोधा से कई भिड़न्तों के बाद अन्ततः चूण्डा ने मण्डोर पर अधिकार कर लिया और वहां अपने तीन पुत्रों को किल्लेदार नियुक्त कर दिया। कुछ समय बाद जोधा से संघर्षरत चूण्डा के तीन पुत्र कुन्तल, मांजा व सुआ मण्डोर युद्ध में काम आए और राव जोधा ने 1443 ई. में मण्डोर का अपना शासन हथिया लिया। उधर चूण्डा सिसोदिया मृत्यु पर्यन्त मेवाड़ राज सत्ता के लिए वफादार रहे। चूण्डा वास्तव में भीष्म पित्तामह से दृढ़ इच्छाधारी थे। उन्होंने अपने पिता की इच्छा को रखने के लिए राज्य हक को छोड़ दिया। अपने सोतेले भाई का राज तिलक कराया। अपनी सौतेली मां की इच्छा को रखने के लिए मेवाड़ को भी छोड़ दिया। मेवाड़ के विरोधियो अन्त करने में राणा कुम्भा का सहयोग किया। मेवाड़ राज विस्तार करते हुए अपने तीन पुत्रों का बलिदान दिया। वे स्वार्थ को छोड़कर त्याग भावना से मेवाड़ की सत्ता के गौरव का मान रखने के लिए जीवन पर्यन्त संघर्षरत रहे। उनके वंशजों ने मेवाड़ के शासक न बनकर सेवक बनकर भी राजपूती का गौरव रखा। वे हमेशा मेवाड़ सेना के अग्र भाग ‘हरावल’ में लड़ते रहे। सिसोदिया राज वंश में चूण्डा के वंशजों (चूण्डावत) का स्थान सर्वोपरी है। जिनकी चार शाखाएं है : किसनावत (सलूम्बर), मेघावात (बेगूं), जगावत (आमेट) व सांगावत (देवगढ़)। ये चारों ठिकाने मेवाड़ के 16 उमरावों में शामिल हैं।

'शताब्दियों की योजना है संघ'

(पृष्ठ एक का शेष)

रमणु, बनासकांठा (गुजरात)

म्याजलार (जैसलमेर)

यदि उस आवश्यकता को पूर्ण करने को सक्षम न हो तो, सामर्थ्यवान बनने में संलग्न होवो और संघ वही काम कर रहा है। इससे पूर्व सांघिक परम्परानुसार यज्ञ के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। संभाग प्रमुख गुलाबसिंह आशापुरा द्वारा संघशक्ति के स्वर्ण जयंती विशेषांक में छपे लेख संघ का क्रमिक विकास का पठन किया। डॉ. सुमन कंवर सांडवा ने कहा कि संघ मौन साधक की तरह विगत 71 वर्षों से समाज जागरण का कार्य कर रहा है एवं युवकों व युवतियों को संस्कारित कर रहा है। कोलायत विधायक भंवरसिंह भाटी ने कहा कि संघ के साधना पथ पर चलने वाले पथिकों का कार्य भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का पुनीत प्रयास है। बीकानेर विधायक सिद्धि कुमारी ने कहा कि सुप्त और भ्रमित समाज को जागृत करने के लिए अपने उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पित संस्था की आवश्यकता होती है और श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसी ही संस्था है। संत रघुवीरजी महाराज ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी की विचारधारा मानव जीवन को उच्चतम स्तर तक ले जाने की विचारधारा है, इसका प्रसार सभी समाजों तक होना आवश्यक है। हम संन्यासियों के लिए भी यह प्रेरणा पूंज है। बीकानेर संभाग के मुख्यालय पर आयोजित इस कार्यक्रम में संभाग के अंचलों से हजारों समाज बंधुओं ने भाग लिया।

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी के सानिध्य में कार्यक्रम रखा गया जिसे संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने संघ के अब तक के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि विरोध संघ का सहोदर है। उन्होंने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है कि संघ का विरोध गली कूचों से निकलकर राज दरबारों एवं टूटते बिखरते नेतृत्व तक पहुंचा है यह प्रगति का सूचक है और भविष्य में यह सत्ताधारियों के गलियारों तक पहुंच सकता है। विरोध को विरोध से दबाना

पुणे (महाराष्ट्र)

तनायन (जोधपुर)

वीर दुर्गादास छात्रावास (पाली)

उसकी भ्रूण हत्या करना है इसलिए इसे बाहर से सहन करना चाहिए एवं भीतर से बाहर निकालना चाहिए। हमें तनसिंह जी की इस सीख को मानते हुए विरोध से अप्रभावित रहकर निरन्तर कर्मशील रहना चाहिए। आज से 71 वर्ष पूर्व प्रकट हुआ एक युवक का संकल्प आज लाखों लोगों के जीवन का मार्गदर्शक बना हुआ है यह संघ की निरन्तर कर्मशीलता का ही प्रभाव है। इसलिए हमें सभी प्रकार के विरोधों एवं प्रशंसा से अप्रभावित रहते हुए निरन्तर गतिमान रहने का अभ्यास करना चाहिए और यही अभ्यास हमारे में निष्काम कर्मयोग का प्रस्फुटन करेगा।

जैसलमेर संभाग का कार्यक्रम म्याजलार में आयोजित हुआ। पूरे जैसलमेर जिले से हजारों की संख्या में पहुंचे समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए ख्याला मठ के महंत गोरखनाथ ने कहा कि संघ का काम पुण्यार्जन का कार्य है। मुख्य वक्ता देवीसिंह माडपुरा ने कहा कि भटकती कौम को त्याग, बलिदान जैसी परम्पराओं पर पुनः आरुढ़ कर कर्तव्य बोध कराने के लिए पूज्य तनसिंह जी ने आज ही के दिन संघ की स्थापना की। उन्होंने कहा कि आज भावना का स्थान बुद्धिमत्ता ने ले लिया है इसलिए हमारी ईच्छाएं विकारग्रस्त हो गई हैं, संतुष्टि का भाव मिट गया है, पापाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार बढ़ा है। इस परिस्थिति में कर्तव्य भाव से समाज का रक्षण व पोषण करने वाली क्षात्रवृत्ति की मांग और अधिक बढ़ गई है। पूज्य तनसिंह जी ने उसी मांग की पूर्ति हेतु हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाए गए पथ को पुनः प्रकट किया। हमारे पूर्वजों ने अधिकार भाव से नहीं बल्कि उपासक बनकर काम किया और उसी दायित्व बोध का दूसरा नाम श्री क्षत्रिय युवक संघ है। उन्होंने कहा कि संघ हमें समझाता है कि यह शरीर एक दिन मिट जाएगा लेकिन यदि इसे हम सत्कर्म में प्रवृत्त करें तो यह सार्थक हो जाएगा।

गुजरात के बनासकांठा प्रांत के रमुण में स्थित रोयल स्कूल में स्थापना दिवस कार्यक्रम रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने कहा कि समग्र त्रस्त जगत को देखकर जिस वेदना का उद्भव हुआ उसी का नाम श्री क्षत्रिय युवक संघ है। संघ की विचार प्रणाली समस्त मानव जाति में सुख, शांति और समृद्धि लाने का मार्ग है। व्यक्ति निर्माण से ही समाज निर्माण संभव है इसीलिए पूज्य तनसिंह जी का संदेश है कि अपने आप को उठाना सारे संसार का उठाना है। त्यागमय जीवन ही परमेश्वर की राह है और संघ उधर ही प्रवृत करता है। अजीतसिंह जी के साथ-साथ पदमसिंह रामसर, अजीतसिंह कणघेर, गुमानसिंह माडका आदि ने संघ की बात कही।

बाड़मेर के मल्लीनाथ छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली ने सन् 1192 में तराईन के युद्ध से प्रारंभ हुए पराधीनता के लंबे काल के उदाहरण देते हुए बताया कि तनसिंह जी ने इस पराधीनता के काल में पनपी विकृतियों पर चिंतन किया और इन विकृतियों से त्राण करने वाले नौजवान तैयार करने के लिए संगठन बनाया। उन्होंने युवाओं में नींव की ईंट बनने का जज्बा पैदा करने संघ की स्थापना की। संघ विचारात्मक क्रांति है और भावनात्मक आंदोलन है। यह विचारों और भावों को कर्मठता में ढालने का मार्ग है। संघ के सिद्धान्त केवल पुस्तकों के श्रृंगार नहीं है, विचार केवल मस्तिष्क में ही नहीं है बल्कि अनेक अवसरों पर समाज में ये प्रकट होकर परीक्षित हुए हैं। उन्होंने गांधीजी की हत्या के समय के आंदोलन, चौपासनी आंदोलन, भू-स्वामी आंदोलन आदि के उदाहरण देते हुए कहा कि संघ के परीक्षण के जब भी अवसर आए, यह खरा उतरा है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

बाड़मेर

गुजरात

संपादकीय

क्षत्रियत्व और संकुचितता

श्री क्षत्रिय युवक संघ के 72वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि क्षत्रिय कभी संकुचित नहीं हो सकता और जो क्षत्रियत्व की बात को संकुचितता कहते हैं वे इसकी परिभाषा को नहीं जानते हैं। ऐसा ही पूज्य तनसिंह जी ने अनेक स्थानों पर लिखा है कि जो लोग क्षत्रियत्व को संकुचितता या सांप्रदायिकता कहते हैं उनका स्वयं का दृष्टिकोण ही संकुचित है। अमृत देकर जीने वाले समाज की रक्षा करने की तैयारी संकुचित हो ही कैसे सकती है? यदि हम इतिहास के पन्नों पर नजर डालें तो क्षत्रियत्व का पालन करने वाले किसी भी महापुरुष ने कभी किसी प्रकार की सीमाओं को स्वीकार नहीं किया। क्षात्रधर्म कभी किसी सीमा की बात नहीं करता। वह किसी विशेष प्रकार की पूजा पद्धति भूखण्ड, मान्यताओं, क्षेत्र, भाषा आदि की सीमाओं में अवरुद्ध नहीं रहा। क्षात्रधर्म किसी भूखण्ड विशेष से लगाव या दुराव की बात नहीं करता बल्कि वह तो सम्पूर्ण सृष्टि के अमृत तत्व की रक्षा के दायित्व का दूसरा नाम है। उसके लिए अपना-पराया का आधार धर्म की स्थापना होता और इसीलिए क्षात्र धर्म की परिभाषा सभी प्रकार की संकुचितता के हनन का पर्याय है। पौराणिक इतिहास से लेकर निकट भूतकाल के इतिहास को टटोलें तो हम पाएंगे कि क्षात्र धर्म का पालन करने वालों ने सभी प्रकार की संकुचिताओं का हनन करते हुए उदारता के श्रेष्ठतम उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। क्षत्रियत्व धर्म की पुनर्स्थापना की घोषणा है और इस घोषणा को करने वाले महापुरुष चाहे राम हों चाहे कृष्ण हों और चाहे कोई और हो सभी ने सीमाओं का हनन किया है। भगवान राम ने पृथ्वी को अराजक तत्वों से मुक्त करने का संकल्प लिया तो वह संकल्प केवल अयोध्या के लिए नहीं था बल्कि जहां तक अपने संकल्प को वे प्रसारित कर सकते थे उन्होंने किया। उत्तर से दक्षिण तक की यात्रा में जो भी अराजक तत्व उनके मार्ग में आया, अपने पराए का भेद किए बिना उन्होंने धर्म की पुनर्स्थापना की। भगवान कृष्ण ने अपने जीवन काल में कभी किसी सीमा को स्वीकार नहीं किया। विजातीय संस्कृति का घटोत्कच भी यदि उनके लक्ष्य में सहयोगी हुआ तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और इस मार्ग में बाधक बनने वाले सजातीय तत्वों के भी विनाश की व्यवस्था में नहीं हिचके। क्षात्रधर्म के आदर्श मॉडल के रूप में संसार के सामने स्वयं को प्रस्तुत कर उन्होंने सिद्ध किया कि क्षत्रियत्व किसी संकुचित सीमा में आबद्ध नहीं होता। पूर्व से लेकर पश्चिम तक उन्होंने धर्म की स्थापना हेतु हर आह्वान के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया एवं सीमाओं में आबद्ध महामानव भीष्म या द्रोणाचार्य को भी मार्ग से हटाकर सिद्ध किया कि क्षात्रधर्म किसी प्रकार की सीमा को स्वीकार नहीं करता। महाभारत काल के बाद हुए महापुरुषों ने भी ऐसी किसी सीमा को स्वीकार नहीं किया। सम्राट अशोक ने बोद्ध धर्म को किसी प्रकार की सीमाओं में आबद्ध होने से बचाते हुए संसार के बड़े भूभाग में माना जाने वाला धर्म बना दिया। गुप्तकाल में सभी प्रकार की विचारधाराओं को पनपने का समुचित अवसर एवं सहायता उपलब्ध करवाई गई। इस देश में जब भी संकुचितता की बात हुई, सिमटने की बात हुई, सीमाओं में आबद्ध होने की बात हुई या श्रेष्ठताओं को सीमाओं में बांधने की बात हुई या समाज के बीच सीमाएं तैयार करने की बात हुई उस समय सत्ता के शीर्ष पर क्षत्रिय की जगह कोई और रहा है। क्षात्र धर्म का पालन करने वाले हमीर तो विजातीय सिपाहियों के लिए अपना सर्वस्व लुटा देते हैं क्योंकि वह न्याय की मांग थी। क्षत्रियत्व के पथ पर आरूढ़ होने वाले प्रताप तो अपनी सेना का सेनापति भी विधर्मी को बना सकते हैं क्यों कि उनकी लड़ाई किसी उपासना पद्धति की लड़ाई या किसी भूखण्ड की लड़ाई नहीं होकर स्वतंत्रता और स्वाभिमान जैसे मौलिक मूल्यों की लड़ाई थी। क्षात्रधर्म का पालन करने वाले दुर्गादास तो अपने संरक्षण में आ चुके शत्रु की संतान की भी रक्षा करते हैं क्यों कि उनकी लड़ाई किसी हिन्दू-मुसलमान की लड़ाई न होकर अन्याय के प्रतिकार की लड़ाई थी। मथुरा को छोड़कर द्वारिका की ओर बढ़ने वाले भगवान कृष्ण की परम्परा के वाहक तो अफगानिस्तान से लेकर जैसलमेर तक भटक सकते हैं क्योंकि अन्याय का प्रतिकार ही उनका जीवन लक्ष्य रहा, वे किसी भूखण्ड के मोह में आबद्ध होकर अपने सनातन मूल्यों से विचलित नहीं हुए. गुजरात के सोलंकी राजाओं के संरक्षण में फला फूला जैन धर्म इस बात को पुष्ट करता है कि क्षत्रियत्व किसी पूजा पद्धति की सीमा में आबद्ध नहीं होता। इतिहास में इस विषय पर उदाहरण खोज कर लिपिबद्ध करने का प्रयत्न करें तो लिपिबद्ध करने वाला थक जाएगा लेकिन उदाहरण खत्म नहीं होंगे। भारतवर्ष के गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में इस प्रकार के उदाहरण मिल जाएंगे कि क्षत्रियत्व ने कभी किसी सीमा को स्वीकार नहीं किया, किसी संकुचितता में आबद्ध नहीं हुआ ऐसे में क्षत्रियत्व को संकुचित कहने वाले लोग निश्चित रूप से अपने अंतर में छिपी संकुचितता का हम पर आरोपित करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए गर्व के साथ कहता है कि हम कोई जातीय संगठन नहीं हैं, किसी पूजा पद्धति, क्षेत्र, भूखण्ड या भाषा में आबद्ध नहीं है, बल्कि उस उदार क्षात्रियत्व की पुनर्स्थापना का काम कर रहे हैं जिसकी छत्रछाया में संसार की समस्त श्रेष्ठताएं फलती और फूलती हैं।

ओसियां में प्रतिभा सम्मान

ओसियां स्थित महाराजा गजसिंह शिक्षण संस्थान परिसर में 17 दिसम्बर को राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में शिक्षा, खेलकूद सहित विभिन्न गतिविधियों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को प्रतीक चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि बदलते वातावरण के साथ समाज और राष्ट्र दोनों को बदलना चाहिए। प्रतिस्पर्धा के युग में समाज द्वारा प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की व्यवस्था करनी चाहिए। राजस्थान बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर ने शिक्षा के प्रसार व नशे से दूर रहने की बात कही। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य मृगेन्द्रसिंह ने एकता व शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही। समारोह में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह व पीसीसी सदस्य मृगेन्द्रसिंह ने शिक्षण संस्थान हेतु 5-5 लाख रुपए एवं रणछोड़सिंह करमसोतों की ढाणी, रुपसिंह बालरवा, पहाड़सिंह रायमलवाड़ा, किशनसिंह मतोड़ा, नारायणसिंह बाना का बास, छैलसिंह रायमलवाड़ा आदि ने 51-51 हजार रुपए देने की घोषणा की।

खरी-खरी

'प्रिय आलोचक'

विगत दिनों श्री क्षत्रिय युवक संघ ने अपना 72वां स्थापना दिवस मनाया और वह तुम्हारा भी स्थापना दिवस था प्रिय आलोचक! क्योंकि तुम भी तो संघ के साथ ही जन्में थे और जब तक संघ रहेगा तब तक बने रहोगे। इसीलिए तो तुम्हें प्रिय संबोधित किया है क्योंकि तुम सदैव आसपास ही रहते हो और विभिन्न रूपों में साथ-साथ चलते रहते हो। कभी तुम कहते हो कि आज राजनीति हमारे जीवन को एक हद से ज्यादा प्रभावित करती है इसीलिए संघ को राजनीति में सक्रिय होना चाहिए तो कभी तुम कहते हो कि संघ तो समाज से ज्यादा राजनीति को तरजीह देता है और राजनीतिज्ञों से संबंध को लेकर तरह-तरह के आरोप लगा देते हो। कभी तुम कहते हो कि इतिहास के गुणगान कर कब तक जीवित रहोगे इसीलिए संघ को वर्तमान की बात करनी चाहिए तो कभी कह देते हो कि इतिहास की रक्षा के लिए संघ आंदोलन नहीं करता। कभी किसी रूप में तुम कहते हो कि संघ का पर्याप्त विस्तार नहीं हुआ, संघ प्रत्येक राजपूत तक नहीं पहुंच पाया है और जब कभी तुम्हें तुम्हारे आस-पास होने वाले कार्यक्रम में आने को कहते हैं तो तुम अनेक बहाने बनाकर कन्नी काट लेते हो। कभी किसी रूप में तुम यह आलोचना करते हो कि समाज के मुद्दों पर संघ आंदोलन नहीं करता और कभी दूसरे रूप में तुम कह देते हो कि कम से कम संघ को तो ऐसे विषय में नहीं पड़ना चाहिए था। तुम ही सामाजिक मुद्दों को लेकर संघ की सक्रिय भागीदारी की मांग करते हो और तुम ही यह आरोप लगाते हो कि संघ ने हमारे मुद्दों को हाईजैक कर लिया। कभी किसी रूप में तुम संघ पर यह आरोप लगाते हो कि संघ समय के साथ नहीं बदल रहा और तुम ही दूसरे किसी रूप में यह आरोप लगाते हो कि संघ अब पुराने वाला नहीं रहा बल्कि बदल गया है। कभी तुम कहते हो कि संघ अनुदार है और कभी कह देते हो कि अति उदार है। कभी तुम संघ पर आरोप लगाते हो कि संघ अपना दायरा विस्तारित नहीं करता और कभी कह देते हो कि रक्त की पवित्रता के नाम पर संघ को कठोर होना चाहिए तथा अन्यों को नहीं शामिल करना चाहिए। कभी तुम सामाजिक रुढ़ियों के प्रति संघ के स्पष्ट एवं निर्णायक रवैये पर प्रश्न उठाते हो तो कभी कह देते हो कि कुछ तो छूट होनी चाहिए। कभी-कभी तो मेरे प्रिय आलोचक तुम इतने निकट होते हो कि तुम्हारी उपस्थिति में चर्चा के बाद हुए निर्णय पर भी निर्णय के बाद परिणाम देखकर प्रश्न उठा देते हो और तुम इतने निकट हो इसीलिए तुम्हें प्रिय संबोधन से संबोधित किया है। तुम अप्रिय तो हो ही कैसे सकते हो क्यों कि तुम भी तो उसी समाज के अंग हो जो संघ का आराध्य है। जिस समाज को पूज्य तनसिंह जी ने भगवती का स्वरूप बताया और जिसकी आराधना का मार्ग बताकर उसे परमेष्टि तक पहुंचने का मार्ग बताया, उसी समाज के तुम भी अंग हो। तो प्रिय आलोचक उस आराध्य का कोई अंग संघ के लिए अप्रिय कैसे हो सकता है। इसलिए तुम चाहे संघ के बारे में कोई भी राय रखो संघ तो तुम्हें अपना मानता है और सदैव अपने मार्ग पर तुम्हारा स्वागत करने को उत्सुक रहता है। लेकिन साथ ही तुम्हें यह भी स्पष्ट कर दूं मेरे प्रिय आलोचक कि तुम यह मत समझना कि तुम्हारी आलोचना से संघ प्रभावित होता है। पूज्य तनसिंह जी ने तो तुम्हारी आलोचना और प्रशंसा दोनों के प्रति समभाव रखने की सीख दी है और लौकिक प्रभाव में कभी इस सीख के विस्मृत होने पर भले ही कोई स्वयंसेवक प्रतिक्रिया व्यक्त कर दे लेकिन संघ तो अपनी रीति-नीति से परिस्थिति अनुसार जिस भी श्रेष्ठतम तरीके से अपने इस आराध्य की सेवा कर सकता है, बस करता रहता है क्योंकि वह मानता है कि भगवान हमारे साथ है और जब वे साथ हैं तो किसी आलोचक की क्या बिसात?

'शताब्दियों की योजना है संघ'

(पृष्ठ तीन का शेष)

संघ सदैव समाज के साथ रहा है यह समाज से इतर कोई संस्था नहीं है। संघ का स्वयंसेवक अग्नि की दो शक्तियों स्वधा व धारण के अनुरूप पहले संघ से ग्रहण करता है और फिर उसे समाज में वितरण करता है। उन्होंने कहा कि संस्कार वे होते हैं जो चौराहे पर खड़े व्यक्ति को अपना मार्ग चुनने की शक्ति प्रदान करते हैं और संघ ऐसे ही संस्कारों का सृजन कर रहा है जो व्यक्ति को कर्तव्य अकर्तव्य का निर्णय करने में सक्षम बनाते हैं। मुंबई में स्थापना दिवस का कार्यक्रम 24 दिसम्बर को रविवार होने के कारण मीरा भायंदर में आयोजित किया गया। लगभग एक माह तक चले संपर्क अभियान के परिणाम स्वरूप मुंबई में रहने वाले समाज बंधुओं तक संघ का संदेश पहुंचाया गया और परिणामतः दो हजार से अधिक समाज बंधु समारोह में पहुंचे। यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में भाखरसिंह आशापुरा ने नववर्ष संदेश पढ़कर सुनाया वहीं शंभुसिंह धीरा ने संघ के शिविरों, शाखाओं आदि गतिविधियों की जानकारी दी। मुंबई प्रांत के प्रांत प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा ने संघ की स्थापना से लेकर वर्तमान तक के क्रमिक विकास की जानकारी दी एवं पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने महाराष्ट्र में संघ की गतिविधियों के इतिहास एवं वर्तमान में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी। अंत में सभी को 22 दिसम्बर का महत्त्व बताते हुए कहा गया कि 21 दिसम्बर के दिन भारत वर्ष में सूर्य की ऊर्जा, ऊष्मा व प्रकाश की न्यूनतम मात्रा मिलती है लेकिन 22 दिसम्बर से यह बढ़ना प्रारम्भ हो जाते हैं। 21 दिसम्बर की रात्रि सबसे बड़ी होती है लेकिन 22 दिसम्बर से यह घटने लगती है अर्थात 22 दिसम्बर भारत वर्ष में ऊर्जा, ऊष्मा व प्रकाश के

बढ़ने का दिन है उसी प्रकार हमारे समाज में भी 22 दिसम्बर 1946 को संघ की स्थापना इस बात का सूचक है कि समाज को जितना पीछे जाना था जा चुका, अब उसे आगे बढ़ना होगा और उसी आगे बढ़ने का मार्ग है संघ। लंबी गुलामी के कारण व अशिक्षा के कारण जो विकृतियां पनपी उन सबसे मुख मोड़ने का दिन है 22 दिसम्बर। उपस्थित समाज बंधुओं को बताया गया कि संसार हमेशा मौलिक सनातन मूल्यों को पसंद करता है और संघ उन्हीं मौलिक सनातन मूल्यों की पुनर्स्थापना का आंदोलन है। संघ प्रत्येक क्षत्रिय को गीता में वर्णित क्षत्रिय की परिभाषा पर आरुढ़ करने का मार्ग है। कार्यक्रम का संचालन सहप्रांत प्रमुख रणजीतसिंह आलासन ने किया। इन बड़े कार्यक्रमों के अतिरिक्त राजस्थान, गुजरात के साथ-साथ भारत वर्ष में जहां भी संघ के स्वयंसेवक रहते हैं उन सभी ने अपने जीवन में स्वर्णिम प्रभात लाने का मार्ग बताने वाले पूनीत संघ के स्थापना दिवस को मनाया। पुना के सुखसागर नगर स्थित दुर्गामाता मंदिर में पुणे प्रांत का कार्यक्रम रखा गया। महरोली (सीकर) के हठी समाज भवन में स्थापना दिवस का कार्यक्रम रखा गया। सिवाणा के कल्लारायमलोत छात्रावास में सिवाणा प्रांत का कार्यक्रम हुआ। बालोतरा प्रांत का कार्यक्रम वीर दुर्गादास राजपूत बोर्डिंग में रखा गया। कुचामन प्रांत का कार्यक्रम संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में रखा गया। भीनमाल प्रांत का कार्यक्रम पुनासा गांव में रखा गया वहीं जालोर प्रांत का कार्यक्रम वीरमदेव छात्रावास जालोर में संपन्न हुआ। पाली प्रांत में पाली शहर का कार्यक्रम वीर दुर्गादास छात्रावास पाली में रखा गया, वहीं सोजत मंडल का कार्यक्रम सोजत सिटी में रखा गया। शेरगढ़ प्रांत का कार्यक्रम गोपालसर में हुआ वहीं जोधपुर शहर प्रांत का कार्यक्रम संभागीय कार्यालय तनायन में रखा गया। उदयपुर प्रांत का कार्यक्रम उदयपुर में वहीं चित्तौड़गढ़ प्रांत का कार्यक्रम भूपाल राजपूत छात्रावास में रखा गया। गुजरात के खोडियार प्रांत का कार्यक्रम सामपुरा गांव में रखा गया। चांधन प्रांत का कार्यक्रम चांधन में संपन्न हुआ। दक्षिण भारत में कर्नाटक के बंगलोर शहर के कोटनपेट स्थित चामुंडा माता मंदिर में 24 दिसम्बर को स्थापना दिवस बाबत कार्यक्रम रखा गया जिसमें राजस्थानी प्रवासी समाजबंधु शामिल हुए। इसके अलावा सभी शाखाओं में शाखा स्तर पर कार्यक्रम रखे गए। सभी जगह माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा जारी नववर्ष संदेश का पठन कर उस पर चर्चा की गई।

जो दायित्व...

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ प्रमुख श्री ने कहा कि 50 वर्ष से अधिक उम्र के सभी सहयोगियों को नए लोगों को उत्तरदायित्व सौंपने के लिए तैयार करना चाहिए और स्वयं मार्गदर्शक की भूमिका में रहकर उनसे काम करवाना चाहिए लेकिन प्रत्येक को यह स्मरण रखना चाहिए कि जब तक सांसे है एवं शरीर में क्षमता है क्रियाशील रहना है। माननीय संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन से पूर्व चार सत्रों में बैठकें कर समीक्षा एवं योजना का काम किया गया। प्रथम सत्र में प्रातः 7.00 बजे 8.30 बजे तक केन्द्रीय कार्यकारियों की बैठक हुई जिसमें विगत छह माह के कार्य की समीक्षा कर व्यवहारिक कठिनाइयों पर चर्चा की गई एवं आवश्यक बदलाव तय किए गए। अल्पाहार के बाद 9.15 बजे प्रारम्भ हुए सत्र में सामूहिक बैठक में समीक्षा की गई। शाखा विभाग, शिविर विभाग, संघ शक्ति पथप्रेरक ग्राहक सदस्यता विभाग, लेखा विभाग, सूचना तकनीक विभाग आदि विभागों के केन्द्रीय प्रभारियों द्वारा विगत छह माह के अपने-अपने विभाग के लक्ष्यों एवं प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया। उपस्थित प्रांत प्रमुखों से मासिक रिपोर्टिंग संबंधी कठिनाइयों को लेकर चर्चा की गई। विभागीय समीक्षा के उपरान्त कार्यकारी क्षेत्र अनुसार समीक्षा की गई। प्रत्येक कार्यकारी क्षेत्र के संभाग प्रमुखों व प्रांत प्रमुखों ने अपनी-अपनी अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं अपने-अपने क्षेत्र में हुए शिविरों, शाखाओं, समारोहों, संपर्क कार्यक्रमों, संघशक्ति पथप्रेरक सदस्यता आदि के बारे में जानकारी से अवगत करवाया। बीच-बीच में माननीय संघ प्रमुख श्री एवं संचालन प्रमुख द्वारा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। तृतीय सत्र में सभी सहयोगी अपने-अपने कार्यकारी के साथ बैठे एवं आगामी उ.प्र.शि. से पहले की कार्ययोजना बनाई। भोजनोपरांत चतुर्थ सत्र आयोजित हुआ जिसमें सर्वप्रथम प्रकोष्ठों के गठन, उनमें अब तक हुए कार्य एवं आगामी समय की योजना प्रस्तुत की गई। इसी सत्र में हुई चर्चा के आधार पर निर्णय लिया गया कि संघ का नया सत्र अब स्थापना दिवस से प्रारम्भ होगा। पूर्व में यह उ.प्र.शि. से शुरू होता था। साथ ही यह तय किया कि शिक्षण सत्र से संबंधित कार्यक्रम शिविर आदि उ.प्र.शि. में ही तय किए जाएंगे। इसी बैठक में यह तय किया गया कि एक ही क्षेत्र में मा.प्र.शि. के समानान्तर कोई अन्य कार्यक्रम या शिविर नहीं किया जाए जिससे मा.प्र.शि. की तैयारी के लिए पूरा समय मिल सके। प्रा.प्र.शि. के संचालकों के लिए न्यूनतम योग्यताएं तय की गई एवं साथ ही यह तय किया गया कि बाल शिविरों का संचालन महिलाओं द्वारा किया जाएगा। बैठक में बड़े शहरों में संघ के विस्तार को लेकर चर्चा की गई एवं इसके लिए बनाई जाने वाली कार्ययोजना को लेकर सुझाव दिए गए।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	06.01.2018 से 08.01.2018 तक	क्षत्रिय समाज बाडी, **धोलेरा** (गुजरात)।
2.	प्रा.प्र.शि.	14.01.2018 से 16.01.2018 तक	फूलसिंह इंटर कॉलेज, **जबदी**, जनपद-अमरोहा (उ.प्र.), दिल्ली लखनऊ मार्ग पर अमरोहा के निकट स्थित।
3.	दंपत्ति शिविर	27.01.2018 से 30.01.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, **बाड़मेर**। (यह शिविर 55 वर्ष (पति की) तक की आयु वाली दंपत्ति के लिए है। अकेले पुरुष या महिला को अनुमति नहीं होगी)।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

(प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न)

'समय का सदुपयोग कर ईश्वर को प्रसन्न करें'

घड़ी के सुईयों में सेकिण्ड की सुई की तरह हमारा समय निरन्तर चलायमान है। इस बीतते समय का सदुपयोग कर हम ईश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं क्यों कि ईश्वर ने अपनी प्रसन्नता के लिए हमें यहां भेजा है। हमारे माता-पिता तो निमित्त मात्र हैं, वास्तव में तो हमारा सृजन ईश्वर ने किया है। गीता के अनुसार प्रकृति रूपी माता में स्वयं ईश्वर ही बीज रूप में स्थित होते हैं। वे अपनी प्रसन्नता हेतु हमारा सृजन करते हैं और हमारे समय का सदुपयोग कर हम उन्हें प्रसन्न कर सकते हैं। बीकानेर के करणी कन्या छात्रावास में 24 से 27 दिसम्बर तक आयोजित शिविर में 25 दिसम्बर को शिविरार्थी बालिकाओं से संवाद के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि स्थूल शरीर हमें दिखाई देता है लेकिन मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार से बना सूक्ष्म शरीर हमें दिखाई नहीं देता लेकिन सांघिक साधना हमें इन्हें देखना सिखाती है, अंतरावलोकन द्वारा अनुभव करवाती है। इन्हें देखकर, पहचान कर एवं इन्हें वश में कर हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं और इसी प्रसन्नता का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। इस शिविर में 140 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। बामणिया, केरली, शेरपुरा, जाखासर, रेड़ा, करड़, गोगरिया, अवाय, मणकसास, करकेड़ी, किरतासर, छनेरी, घेघड़ा, मोरखाना, छतरगढ़, साडासर, ऊडसर, खारा, राणेर, रुखासर, अनूपगढ़, खोजास, खींवसर, उदट, नाडा, लखासर, आऊ, बेण्यांकाबास आदि स्थानों से आई बालिकाओं के शिविर का संचालन ऊषा कंवर पाटोदा ने यशवीर कंवर बेण्यांकाबास एवं प्रकाश कंवर गोठड़ा की सहायता से किया।

सूरत (गुजरात)

ढीमा (गुजरात)

भीलवाड़ा हाड़ोती प्रांत के कोटा मंडल में 25 से 28 दिसम्बर तक बालिका प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें बूंदी, कोडक्या, चौतरों का खेड़ा, अड़ील, सबलपुरा आदि गांवों के अलावा भीलवाड़ा शहर, चित्तौड़गढ़, झालावाड़ व बारां से 150 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन अंजु कंवर अकदड़ा ने विष्णु कंवर झाझड़ के सहयोग से किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बेण्यांकाबास व चित्तौड़गढ़ संभाग के संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित रहे। पुष्कर स्थित जयमल कोट में इसी अवधि में बालिका शिविर संपन्न हुआ जिसमें अजमेर, नागौर, भीलवाड़ा, जालोर, जोधपुर, बाड़मेर जिलों के विभिन्न गांवों की 110 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन रश्मि कंवर देलदरी ने मीनाक्षी कंवर झिंझनियाली व रीटा कंवर देवलिया के सहयोग से किया। गुजरात के महेसाणा जिले के पिलवई में बालिका प्रा.प्र.शि. 23 से 25 दिसम्बर तक संपन्न हुआ जिसमें जागृति कंवर हरदासकाबास के संचालन में विभिन्न गांवों की 210 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। इसी अवधि में बनासकांठा के ढीमा में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सान्निध्य में बालकों का शिविर संपन्न हुआ जिसमें 150 से अधिक युवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में 24 दिसम्बर को अपराह्न महिलाओं एवं बालिकाओं की एक बैठक आयोजित हुई जिसमें अजीतसिंह धोलेरा ने नारी धर्म व संघ विषयक उद्बोधन दिया। इसी अवधि में साबरकांठा क्षेत्र के डोभाड़ा में बालकों का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें इन्द्रजीतसिंह जेतलवासणा के संचालन में 55 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। गांधीनगर के समर्पण कॉलेज में योगेन्द्रसिंह काणेटी के संचालन में प्रा.प्र. शिविर हुआ जिसमें 158 युवकों ने प्रशिक्षण लिया। इसी प्रकार गुजरात में 23 से 25 दिसम्बर के बीच तीन प्रा.प्र.शि. युवकों के एवं एक प्रा.प्र.शि. बालिकाओं का संपन्न हुआ। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में महिपालपुर में 22 से 25 दिसम्बर तक शिविर हुआ जिसका संचालन राजेन्द्रसिंह बोबासर ने किया। शिविर में दिल्ली, फरीदाबाद और गुड़गांव से शिविरार्थी आए एवं भविष्य में निरन्तर संघ से जुड़े रहने का निश्चय प्रकट किया। विदाई संदेश के रूप में शिविर प्रमुख ने कहा कि संघ हमें अपने आपको पहचानने का अवसर देता है, अतः स्वयं को पहचानें। 24 से 26 दिसम्बर तक सूरत में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसमें कामरेज, अमरोली, कतारगाम, मगोब, गोड़ादरा, भावनगर, सुरेन्द्रनगर, मेहसाणा, जूनागढ़, पडुस्मा आदि स्थानों से 102 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। सूरत में रहने वाले प्रवासी राजस्थानी बंधुओं के साथ-साथ इस शिविर में स्थानीय गुजराती बंधुओं की संख्या अधिक रही। शिविर का संचालन धर्मेन्द्रसिंह आंबली ने किया। जैसलमेर जिले के सीमावर्ती गांव मिठड़ाऊ में 24 से 27 दिसम्बर तक प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। पाक सीमा से मात्र 3 किमी दूर इस शिविर में पोछीना, केरला, मिठड़ाऊ, तेजमालता, म्याजलार, बेरसियाला, फुलिया, दव, झिंझनियाली, देवड़ा, सोढ़ा आदि गांवों के 150 से अधिक स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन भोजराजसिंह तेजमालता ने साथी स्वयंसेवकों के सहयोग से किया। शिविर में एक दिन सीमा चौकियों के भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया जिसमें सीमा प्रहरियों से मिलकर उनके अनुभव जाने। म्याजलार गांव के निवासियों का सहयोग उल्लेखनीय रहा। इस दौरान मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में दो प्रा.प्र.शि. संपन्न हुए। पहला शिविर 24 से 27 दिसम्बर तक मंदसौर जिले के नागखजूरी में संपन्न हुआ जिसमें आसपास के गांवों के 150 से अधिक युवकों से प्रशिक्षण लिया। इसके बाद 27 से 30 दिसम्बर तक रतलाम जिले की जावरा तहसील के अयाना में शिविर हुआ। इस शिविर में भी 50 से अधिक युवकों ने प्रशिक्षण लिया। दोनों शिविरों का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। उनके सहयोग के लिए मेवाड़ व जोधपुर से अनेक स्वयंसेवक साथ गए।

मिठड़ाऊ (जैसलमेर)

पुष्कर (अजमेर)

कोटा

देवातु में दिशाबोध

शेरगढ़ प्रांत में प्रति सप्ताह एक गांव के युवाओं से मिलने के कार्यक्रम 'दिशाबोध' के तहत सरस्वती उ.मा.वि. देवातु के प्रांगण में कार्यक्रम रखा गया जिसमें गांव के युवक एवं युवतियां उपस्थित रहे। प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू, भैरूसिंह बेलवा, महेन्द्रसिंह चौरड़िया आदि ने संभागीयों को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व में सुधार हेतु संघ के प्रयासों से अवगत करवाया। मा.प्र. शिविर तेना में आने वाले स्वयंसेवकों की सूची बनाई गई।

टीका लौटाया

सीकर जिले के मांडोता निवासी देवीसिंह का विवाह टीबड़ी (जैतारण) में हुआ। दुल्हे ने तोरण के समय पेश की गई टीके की रकम लौटाकर मांडोता गांव के युवाओं के लिए प्रेरणास्पद काम किया।

पाटोदी में स्नेह मिलन

बालोतरा के निकट पाटोदी गांव में पाटोदी पंचायत समिति की 21 ग्राम पंचायतों के समाज बंधुओं का स्नेहमिलन 28 दिसम्बर को संपन्न हुआ। स्नेहमिलन में पाटोदी के पूर्व जागीदार ठा. जवाहरसिंह के नाम से छात्रावास बनाने की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई। मोतीसिंह भगवानपुरा को छात्रावास कमेटी का अध्यक्ष मनोनीत किया गया एवं छात्रावास भूमि के पट्टे को पंजीकृत करवाने संबंधी चर्चा की गई। स्नेहमिलन को देवराजसिंह, हनुवंतसिंह, सोहनसिंह कालेवा, कल्याणसिंह ओकातया बेरा, गुमानसिंह सरपंच, अमरसिंह भाटी, नखतसिंह कालेवा, बिशनसिंह, राजेन्द्रसिंह आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने नशा मुक्ति, सामाजिक एकता आदि विषयों पर अपनी बात रखी।

धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रही पुस्तक 'एकलव्य का अंगूठा' का शेष भाग स्थानाभाव के कारण इस अंक में नहीं दिया जा रहा है। अगले अंक पढ़े।

गुजरात के राजपूत विधायक

हाल ही में सम्पन्न गुजरात विधानसभा चुनावों में निम्न राजपूत विधायक निर्वाचित हुए हैं :

क्र.सं.	नाम	विधानसभा क्षेत्र	पार्टी
1.	प्रदीपसिंह जाड़ेजा	वटवा	भाजपा
2.	जयद्रथसिंह परमार	हालोल	भाजपा
3.	धर्मेन्द्रसिंह जाड़ेजा	जामनगर उत्तर	भाजपा
4.	गीता बा जयराजसिंह जाड़ेजा	गोंडल	भाजपा
5.	भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा	धोळका	भाजपा
6.	वीरेन्द्रसिंह जाड़ेजा	मांडवी	भाजपा
7.	अरुणसिंह राणा	वाग्रा	भाजपा
8.	राजेन्द्रसिंह चावड़ा	हिम्मतनगर	भाजपा
9.	सी.के. राओलजी	गोधरा	भाजपा
10.	कीर्तिसिंह वाघेला	कांकरेज	भाजपा
11.	प्रद्युम्नसिंह जाड़ेजा	अबड़ासा	कांग्रेस
12.	डॉ. चतुरसिंह चावड़ा	गांधीनगर उत्तर	कांग्रेस

इनमें से भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा को केबिनेट मंत्री एवं प्रदीपसिंह जाड़ेजा व जयद्रथसिंह परमार को राज्यमंत्री बनाया गया है।

शेरगढ़ में कर्मचारी व अधिकारियों की बैठक

राजपूत विकास समिति शेरगढ़ के तत्वावधान में समाज के अधिकारियों व कर्मचारियों की बैठक संपन्न हुई। बैठक में शेरगढ़, बालेसर, देचू व सेखाला पंचायत समिति के कर्मचारी व अधिकारी शामिल हुए। बैठक को भगवानसिंह तेना, मनोहरसिंह सेतरावा, गायड़सिंह बालेसर, भगवानसिंह कोटड़ा, जुगतसिंह करनोत, गायड़सिंह रामसर, भंवरसिंह बालेसर, चंद्रवीरसिंह भाळू, कर्नल नारायणसिंह आदि ने गौरवशाली इतिहास को जानकर उससे प्रेरणा लेने, राजपूत विकास समिति के कार्यों में सहयोग करने, नशे की प्रवृत्ति के खिलाफ अभियान चलाने, सकारात्मक वातावरण बनाने, तकनीकी शिक्षा पर जोर देने, समाज के ऋण को अनुभव कर उससे उऋण होने हेतु कार्यशील होने आदि विषयों पर विचार व्यक्त किए। संचालन मदनसिंह सोलंकियातला ने किया।

मुंबई में शाखा मिलन

मुंबई में 24 दिसम्बर को आयोजित स्थापना दिवस समारोह के बाद 25 दिसम्बर को शाखाओं में मिलन का कार्यक्रम रखा गया। प्रातःकाल भायंदर शाखा लगी जिसमें बताया गया कि शाखा में प्रार्थना, सहगीत, खेल, चर्चा आदि सभी कार्यक्रमों को स्थान दिया जाना आवश्यक है। समाज चरित्र के संस्कार पद्धति प्रकरण के एक अवतरण पर चर्चा करते हुए बताया गया कि संघ का कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से किशोर होते हैं क्योंकि उन्हें आवश्यकतानुसार मोड़ा जा सकता है। प्रोढ़ लोगों में संस्कार निर्माण कठिन है क्योंकि उनमें पहले से पड़े संस्कारों को हटाकर नए विकसित करने का दोहरा काम करना पड़ता है। मलाड शाखा के स्वयंसेवकों से मिलने का कार्यक्रम दोपहर को रखा गया। आपसी परिचय के बाद शाखा में नियमित आने में होने वाली कठिनाइयों को लेकर चर्चा की गई एवं यथा परिस्थिति निरन्तर जुड़ा रहने की आवश्यकता बताई। साथ ही साप्ताहिक रूप से परिवार के बालकों को भी शाखा में लाने की जरूरत चर्चा की गई क्योंकि संघ का मूल कार्य क्षेत्र बालक है। अपराह्न 3.30 बजे राणा प्रताप हॉल मुंबई में मुंबई की तनेराज शाखा से जुड़े स्वयंसेवक आए एवं उनसे शाखा एवं शिविर व संघ के अन्य कार्यक्रमों बाबत विस्तार से चर्चा की गई। चर्चा के दौरान बताया गया कि संघ की शाखा में या शिविर में आने से हमारे पर एक दायित्व आ जाता है और वह यह है कि हमने संघ से जो कुछ पाया है उसे अपने निकटतम व्यक्ति तक पहुंचाएं। संघ विकास और विस्तार दोनों अवधारणाओं को साथ-साथ लेकर चलता है। यहां व्यक्तिगत विकास की एकांगी अवधारणा त्याज्य मानी जाती है। संघ व्यष्टि से समष्टि और फिर परमेष्टि की ओर प्रवाहमान मार्ग है।

यथार्थ गीता वितरित की

जैसलमेर जिले में स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज के निर्देश पर प्राप्त हुई यथार्थ गीता का ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण किया गया। चांधन प्रांत के बडोड़ागांव, मूलाना, दवाड़ा, धायसर, डेलासर, सोढ़ाकोर, चांधन आदि गांवों में तारेन्द्रसिंह जिंझनियाली, रतनसिंह सिंह बडोड़ागांव, चंदनसिंह मूलाना, जबरसिंह लूणा आदि के दल ने शिक्षकों एवं अन्य शिक्षित लोगों को यथार्थ गीता की 250 प्रतियां निःशुल्क वितरित की एवं इसका अध्ययन करने का निवेदन किया। पोकरण के भैसाणा में नरपतसिंह राजगढ़ को विद्यालयों में जाकर गीता वितरित की। सांवलसिंह मोढ़ा के दल ने अजीतपुरा, गुमानसिंह की ढाणी, जोगी दास का गांव, तेजमालता, मोढ़ा, बोगनपाई, रणधा, जयचंदों की ढाणी, बिजराज का तला, पोछीना, कुंडा, निबली, बईया, झिंझनियाली, गुड़ा, भू की ढाणी, सिहड़ार, दीपसिंह की ढाणी, करड़ा, सोहनसिंह की ढाणी, मूलसिंह की ढाणी, गूंजनगढ़ आदि गांवों में पढ़े लिखे लोगों को यथार्थ गीता वितरित की। अन्य दल ने केशरसिंह का तला, महाराज का तला, फूलिया, दव, बेरसियाला, खुहड़ी, धोबा आदि गांवों में यही पुण्य कर्म किया। गणपतसिंह अवाय ने अवाय, नाचना, कबीरपुरा, पांचे का तला, भारेवाला, चिन्नू, टावरीवाला, शक्तिनगर आदि स्थानों में 250 से अधिक प्रतियां वितरित की। स्थापना दिवस के प्रचार हेतु निकले विभिन्न दलों ने स्थापना दिवस के निमंत्रण के साथ-साथ यह कार्य भी किया एवं सभी लोगों को पूज्य स्वामी जी का संदेश देते हुए भगवान श्रीकृष्ण की यथार्थ वाणी के संकलन को एकाधिक बार पढ़ने का आग्रह किया।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

साल बचायें (NIOS) साल बचायें

शिक्षा सर्वधन प्रद्यानम

कोई भी कक्षा फेल या पास साक्षर व्यक्ति आधार कार्ड से सीधे 10वीं में प्रवेश लें, 10वीं पास सीधे 12वीं करें। (कोई उम्र का बंधन नहीं, कोई T.C. की जरूरत नहीं)

▶▶आवेदन: जनवरी-फरवरी में ▶▶परीक्षा : सितंबर-अक्टूबर में

स्कूल छोड़ चुकी बालिकाओं व महिलाओं के शिक्षित होने का सुनहरा अवसर

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं

द्वारा घर बैठे पत्राचार द्वारा B.A., B.Com. MA व योग शिक्षा में MA

▶▶फार्म : जनवरी-फरवरी में ▶▶परीक्षा : जुलाई-अगस्त में

सरपंच बनने, राशन डीलर बनने, ड्राईविंग लाईसेंस बनवाने, नरेगा मेट, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, आशा सहयोगिनी बनने तथा फौज, सरकारी नौकरी, व्यवसाय, विदेश जाने आदि के लिए डिग्री, डिप्लोमा के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर

आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल

सोलंकियातला, तह. शेरगढ़, जिला जोधपुर

प्रबंधन : सांगरसिंह 9783202923

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

बिछुड़ गए बीच राह में, दिल से ना जा पाओगे।
आंखों में आंसू है गम के, उम्र भर याद आओगे।।

हमारे आदरणीय प्रेरणास्रोत

स्व. मगसिंह

पुत्र भूरसिंह देवल ठिकाना जावीया की प्रथम पुण्यतिथि पर हम सब उनके आत्मज उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

देहवासन : 1.1.2017

श्रद्धानवत : ठा. भोपालसिंह, हिम्मतसिंह (डीवाई एसपी), माधुसिंह, देवेन्द्रसिंह (जिला मंत्री भाजपा, जालोर), लालसिंह, प्रतापसिंह, अर्जुनसिंह, नाथुसिंह, गुलाबसिंह, गणपतसिंह, गोपालसिंह, नारायणसिंह (भाई), नरेन्द्रसिंह, महिपालसिंह (पुत्र), समुन्द्रसिंह, दीपसिंह, नितिनसिंह, कृष्णपालसिंह, नेपालसिंह (भतीज), शौर्यवर्धनसिंह (पौत्र) एवं समस्त देवल परिवार।

ठिकाना : जावीया (जसवंतपुरा), जिला-जालोर।

ठा. हरिसिंह सोलंकियातला का देहावसान

ठा. हरिसिंह सोलंकियातला

भू-स्वामी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले एवं पूज्य तनसिंह जी के राजनीतिक सहयोगी रहे **ठा. हरिसिंह सोलंकियातला** का 18 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक कुम्भसिंह सोलंकियातला के बड़े भाई थे। आपने भू-स्वामी आंदोलन में शेरगढ़ क्षेत्र में नेतृत्व किया एवं रामराज्य परिषद, स्वतंत्र पार्टी एवं जनता पार्टी में सक्रिय रहे। आपने 1971-72 में स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर शेरगढ़ से विधायक का चुनाव भी लड़ा था। अपने तेना शिविर में प्रवास के दौरान संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास 29 दिसम्बर को संघ की तरफ से संवेदना प्रकट करने सोलंकियातला जाकर आए। संघ के स्वयंसेवक मदनसिंह सोलंकियातला के अनुसार :

ठाकर हरजी ठावकौ, रजपुती रहवास।
पूत भल पूंजराज रौ, खरा गुणां में खास।।
आछौ दिन नी ऊगियौ, भली न ऊग भौर।
हरजी सुरग सिधारिया, परभातां री पौर।।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री वीरेन्द्रसिंह जाड़ेजा व श्री प्रद्युम्नसिंह जाड़ेजा को विधायक बनने एवं श्री हठूभा सोढ़ा, श्री हठूभा जाड़ेजा व श्री वीरभद्रसिंह जाड़ेजा को नवीन सामाजिक दायित्व मिलने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

श्री वीरेन्द्रसिंह जाड़ेजा
विधायक-मांडवी
प्रमुख-श्री कच्छ जिला क्षत्रिय सभा

श्री प्रद्युम्नसिंह जाड़ेजा
विधायक अबड़ासा

श्री हठूभा सोढ़ा कोरियाणी
खजांची-श्री कच्छ क्षत्रिय सभा
सदस्य-क्षत्रिय सभा, श्री कच्छ जिला पंचायत

शुभेच्छू

श्री हठूभा जाड़ेजा (लोरिया)
प्रमुख-श्री कच्छ जिला
क्षत्रिय युवा सभा

शुभेच्छू

श्री वीरभद्रसिंह जाड़ेजा (वींझाण)
प्रमुख-श्री कच्छ करणी सेना

सुरूभा सामतजी जाड़ेजा बैयावो

दानूभा भेरजी बालापर

हठूभा बुधूभा नरेड़ी

रामसिंह चनूभा मूड़ीया

भागीरथसिंह चिनूभा बालापर

हिम्मतसिंह गुनेरी

गोपालसिंह राणाजी गुनेरी

महेन्द्रसिंह राणूभा गुनेरी

महावीरसिंह स्वरूपसिंह कोरियाणी

रामदेवसिंह लालसिंह पांध्रो

सुरूभा देशरजी
सांयरा

मेघराजसिंह
गजाजी छेर

घनश्यामसिंह
विजयराजसिंह छेर

वीरेन्द्रसिंह
भूरजी पांध्रो

भीमसिंह प्रतापसिंह
बैयावो

तेजेन्द्रसिंह
बलवंतसिंह (तरा-मंजल)

भारूभा हनूभा
वाड़ापद्धर

शक्तिसिंह बहादूरसिंह
कोरियाणी

जालूभा सोढ़ा
कोरियाणी

जुवानसिंह राणसिंह

नरेन्द्रसिंह
मंगलसिंह गुनेरी

बलवंतसिंह सांगसिंह
माता का मढ़

हमीरसिंह
मूलाना गांधीधाम

तनेराजसिंह
वर्मानगर (बिजावा)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org